IJAER/March-April-2025/Volume-14/Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

राम की पदयात्रा : जन आनन्दयात्रा

डॉ. सुमन जैन

नेति नेति जेहि बेद निरूपा।
निजानंद निरूपाधि अनूपा।।
संभु विरंचि विष्णु भगवाना।
उपजहिं जासु अंस ते नाना।।[1]

जिन्हें वेद 'नेति–नेति' कहकर निरूपण करते हैं। जो आनन्दस्वरूप अनुपम हैं एवं जिनके अंश से ही शिव, ब्रह्मा, विष्णु प्रकट होते हैं। वही सच्चिदानन्द श्रीराम अपने भक्तों की आनन्द देने के लिए धरती पर अवतरित होते हैं। यथा –

व्यापक अकल अनीह अज निर्गुन नाम न रूप।
भगत हेतु नाना विधि करत चरित्र अनूप।।[2]

मनु शतरूपा के कठोर तप एवं निश्छल अलौकिक प्रेम वश होकर श्रीहरि ने पुत्र होना स्वीकार किया एवं भक्तों को आनन्द मिले ऐसी दिव्य नरलीला करने का विचार किया। यथा –

इच्छामय नरवेष सँवारे। होइहउँ प्रगट निकेत तुम्हारे।।
अंसन्ह सहित देह धरि ताता। करिहउँ चरित भगत सुखदाता।।[3]

धर्मधुरन्धर पुण्यात्मा चक्रवर्ती राजा दशरथ–कौशल्या के यहाँ अयोध्या जी में राम का जन्म होता है। सुन्दर आचरण, मनमोहक छवि के कारण राम ने सम्पूर्ण अयोध्या को आनन्द पहुँचाया एवं मिथिलावासियों को सियावर बन अत्यधिक आनन्दित किया। माता–पिता की आज्ञा पालन कर आदर्श पुत्र का दायित्व निभाते हुए वनवासी बन जब वन यात्रा करते हैं तो अपने शान्ताकार स्वरूप, प्रसन्न मुद्रा, मनोहारी छवि से पृथ्वी के कोने–कोने को हर्ष, उल्लास, आह्लाद, आनन्द, परम विश्राम से आपूरित कर देते हैं। वे भक्त, सन्त, सज्जनों को अपने दर्शन सुख से तृप्ति, पतितों को पावनता,

[1] रामचरितमानस – बालकाण्ड, पृ.सं. 136
[2] रा.च.मा.बा.का., दोहा 205
[3] रा.च.मा.बा.का., दोहा 142, ऐसेउ प्रभु सेवक बस अहई। भगत हेतु लीला तनु गहई।। रा.च.मा. पृष्ठ सं. 136
देखि प्रीति सुनि बचन अमोले। एवमस्तु करुणानिधि बोले।।
आपु सरिस खोजौं कहँ जाई। नृप तव तनय होव मैं आई।।

वंचित, दलित, निर्वासित, तिरस्कृत, मनुष्यों को यथोचित समाज में स्थान एवं सम्मान देकर, अधम पक्षी गिद्ध, पशु प्राणियों को गले लगाकर सुख पहुँचाते हैं तो दुष्टों, राक्षसों, का संहार ही नहीं करते उन्हें तार देते हैं अर्थात् उद्धार कर आह्लादित कर देते हैं।

राम की मिथिला यात्रा –

ऋषि विश्वामित्र राक्षसों से त्रस्त होकर महाराजा दशरथ से राम–लक्ष्मण को यज्ञ रक्षार्थ लेने आते हैं।[1] प्रसन्न भाव से मुनि के साथ जाते हुए मार्ग में ताड़का का वध करने के साथ ही उसे तार देते हैं।[2] मारीच को सौ योजन दूर फेंका, सुबाहु का वध किया। सीतास्वयंवर (धनुषयज्ञ) को देखने रामजी, मुनि विश्वामित्र के साथ मिथिला की पदयात्रा करते हैं। मार्ग में पति के शापवश पत्थर बनी हुई अहिल्या को चरणरज से पावन बना पतिलोक को भेज देते हैं।[3] गुरु आज्ञा से राम–लक्ष्मण मिथिला भ्रमण को निकलते हैं तो उनकी मनोहारी छवि को देख सभी पुरवासी निहाल, धन्य हो रहे हैं। उन्हें तो नयन होने का सुफल प्राप्त हो गया, मानो रंक को महानिधि मिल गई। यथा द्रष्टव्य–

देखन नगरू भूपसुत आय। समाचार पुरबासिन्ह पाय।।
धाए धाम काम सब त्यागी। मनहुँ रंक निधि लूटन लागी।।[4]
हियँ हरषहिं बरषहिं सुमन सुमुखि सुलोचनि बृंद।
जाहिं जहाँ जहँ दोउ तहँ तहँ परमानन्द।।[5]
होहिं सुखी लोचन फल पाई।।[6]

सीतास्वयंवर में पहुँचने पर अपनी ही मनोभावना के अनुसार रामजी दिखाई दे रहे हैं– जिन्ह के रही भावना जैसी। प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी।।

हरिभक्तों को दोनों भाई सभी प्रकार से सुखकारी तो सीताजी के सुख को तो शब्दों में कहा ही नहीं जा सकता। यथा –

हरिभगतन्ह देखे दोउ भ्राता। इष्ट देव इव सब सुख दाता।।

---

[1] असुर समूह सतावहिं मोही। मैं जाचन आयउँ नृप तोही।।
अनुज समेत देहु रघुनाथा। निसिचर वध मैं होब सनाथा।। रामचरितमानस बालकाण्ड, पृष्ठ 189
[2] पुरुषसिंह दोउ बीर हरषि चले मुनि भय हरन। मानस बा.का., दोहा 208 (ख)
एकहि बान प्रान हरि लीन्हा। दीन जानि तेह निज पद दीन्हा।। मानस बा.का. दोहा 208 (3)
[3] गौतम नारि श्राप वस उपल देह देह धरि धीर। परसत पद पावन सोक नसावन प्रगट भई तपपुंज राही। मानस बा.का.
मैं नारि अपावन प्रभु जगपावन।। रा.च.मा., बा.का., पृष्ठ 193
[4] रा.च.मा.बा.का., पृ.सं. 201
[5] रा.च.मा.बा.का., दोहा 223
[6] मानस, पृष्ठ 201

रामहि चितव भायँ जेहि सीया। सो सनेहु सुखु नहिं कथनीया।।[1]

जनक के परिताप को मिटाने के लिए राम धनुष भङ्ग करते हैं।[2] धनुष भङ्ग होते ही सर्वत्र आनन्द छा गया। यथा –

भुवन चारिदस भरा उछाहू। जनकसुता रघुवीर बिआहू।
सुनि सुभ कथा लोग अनुरागे। मग गृह गली सँवारन लागे।।[3]

मिथिलावासियों को आनन्दित करते राम ब्याह कर अयोध्या पहुँचे तो आनन्द का समुद्र ही प्रवाहमान हो जाता है। जैसे –

आए ब्याहि रामु घर जब तें। बसइ आनंद अवध सब तब ते।।
प्रभु विवाहँ जस भयउ उछाहू। सकहिं न बरनि गिरा अहिनाहू।।[4]

रामजी की वनवास यात्रा –

रामजी का धरा पर अवतरण का उद्देश्य लोककल्याण एवं लोकरक्षा है। इसलिए जब वनवास की आज्ञा होती है, तो मुदित भाव से माता को समझाते हैं –

पिता दीन्ह मोहि कानन राजू।
जहँ सब भाँति मोर बड़ काजू।।
आयसु देहि मुदित मन माता।
जेहिं मुद मंगल कामन जाता।।[5]

तमसा नदी के तीर प्रथम रात्रि बिताई। वहाँ से शृगवेरपुर पहुँच जाते हैं, जहाँ निषादराज गुह अपने बंधुओं, परिवार, प्रजाजनों के साथ अपने भाग्य की सराहना करते हुए बड़े ही प्रेम से रामजी से मिलता है और भेंट में कन्द, मूल, फल देता है।[6] उनके प्रेम को राम ने मान दिया और निषादराज से सखा धर्म निभाया।

---

[1] मानस, बा.का., पृष्ठ 220
[2] उठहु राम भंजहु भवचापा। मेटहु तात जनक परितापा।। मानस, बा.का., पृष्ठ 230
[3] रा.च.मा.बा.का., पृष्ठ 264
[4] रा.च.मा.बा.का., पृष्ठ 324
[5] रा.च.मा. अयोध्या काण्ड, पृष्ठ 372, दोहा 52 (2,3)
[6] यह सुधि गुहँ निषाद जब पाई। मुदित लिए प्रिय बंधु बोलाई।
लिए फल मूल भेंट भरि भारा। मिलन चलेउ हियँ हरषु अपारा।। रा.च.मा. अयोध्याकाण्ड, पृष्ठ 400

जिन चरणों से गंगा निकली, योगी, मुनि जिन चरणों का ध्यान करते हैं, उन्हीं चरणों को केवट ने, प्रेम सने अटपटे बैन बोलकर पखार लिये।[1]

तप, तीर्थसेवन, जप, योग, वैराग्य, त्याग के सुफल के रूप में भारद्वाज मुनि को दर्शन देकर आनन्दित किया।[2] राम जी निरन्तर आगे बढ़ते गये। उनकी मनभावन छवि का जिन्होंने भी दर्शन किया वे अपनी सब पीड़ा, वेदना, अभाव को भुलकर अन्तर्मन तक पुलकित हर्षित हो गये। उनका आभामण्डल इतना शान्त, अनुपम, विश्रान्ति देने वाला है। यथा –

जहँ जहँ रामचरण चलि जाहीं। तिन्ह समान अमरावती नाहीं।।[3]
एहि बिधि रघुकुल कमल रवि मग लोगन्ह सुख देत।
जाहि चले देखत विपिन सिय सौमित्रि समेत।।[4]

वाल्मीकि ऋषि से भेंट की। चित्रकूट में अत्रिमुनि एवं अनुसूया को दर्शन सुख दिया। राम आगमन सुन अत्रि मुनि पुलकित हो दौड़े, दोनों भाइयों को हृदय से लगा लिया, प्रेमाश्रुओं से नहला दिया। यथा –

पुलकित गात अत्रि उठि धाए। देखि रामु आतुर चलि आए।
करत दंडवत मुनि उर लाए। प्रेम बारि द्वौ जन अन्हवाए।।

मुनिवृंद आये, आनन्दित हो रामजी को हृदय से लगा लिये। चित्रकूट निवासी, कोल, भील, आदिवासी ग्रामीण आये। सभी रामजी को अपने मध्य में पाकर ऐसे हर्षित हुये मानो नवनिधि ही घर आ गई हो। शरीर पुलकित, नेत्र, प्रेम, जल से भरे हुए, अत्यन्त अनुराग से राम सिया को चित्रलिखित, एकटक निहारे जा रहे हैं। स्वयं को, भूमि, वन, पंथ, पहाड़, पशु, पक्षी, झरने धन्य है जहाँ राम सिया ने पग धर दिये। रामजी पिता के समान उन्हें दुलार दे रहे हैं और उनकी बात सुन रहे हैं।[5]

---

[1] सुनि केवट के बैन प्रेम लपेटे अटपटे। बिहसे करुनाऐन चितइ जानकी लखन तन। मानस, अयोध्याकाण्ड, दोहा 100
अतिआनंद उमगि अनुरागा। चरन सरोज पखारन लागा।
पद पखारि जलु पान करि आपु सहित परिवार। पितर पारु करि। मानस दोहा 101

[2] आजु सुफल तपु तीरथ त्यागू। आजु सुफल जप योग बिरागू।।
सफल सकल सुभ साधन साजू। राम तुम्हहि अवलोकत आजू।। रा. मानस, अयोध्याकाण्ड 106/3

[3] मानस अयोध्याकाण्ड, पृष्ठ 421

[4] मानस अयोध्याकाण्ड, 122 दोहा

[5] मानस अयोध्याकाण्ड, पृष्ठ संख्या 440, 441, दोहा 135/1,2,3, दोहा 136/1,2,3

सभी को सुख पहुँचाते अनुज सहित राम सिया आगे बढ़ते गये। विराध राक्षस को मारकर शाप से मुक्त किया। तपस्यारत शरभंग मुनि रामजी की ही प्रतीक्षा में थे। राम का साक्षात् होते ही योगाग्नि से प्राणों को भस्म कर दिया। आगे बढ़ने पर दण्डकारण्य में विशालकाय हड्डियों का ढेर था। करुणामय राम के नयन सजल हो गये और उन्होंने प्रतिज्ञा की कि पृथ्वी को राक्षसरहित करूँगा एवं मुनियो को दर्शन से आनन्द पहुँचाऊँगा।[1] सुतीक्ष्ण मुनि को दर्शन लाभ देकर, अगस्त्य मुनि के पास गये। यथा –

सुनत अगस्ति तुरत उठि धाए।
हरि बिलोकि लोचन जल छाए।।[2]

दण्डकारण्य में गोदावरी नदी के किनारे पंचवटी स्थान में सभी को आनन्दित किया। रावण से सीता को बचाते हुए मरणासन्न गिद्ध जटायु को करुणा एवं प्रेम के साथ गोद में लिया, सहलाया, पीड़ा का हरण किया और जीवनदान देने की बात पर, जटायु के यह कहकर मना करने पर कि आपके दृष्टिपथ में रहते प्राण छोडूं, इससे बड़ा सौभाग्य क्या हो सकता है? पिता समान गति प्रदान की।[3]

गुरु मतंग की आज्ञा से निरन्तर राम सुमिरन, नवधा भक्ति का साकार रूप, रामदर्शन की आशा में ही जीवन धारण किए है, ऐसी शबरी भक्त को दर्शन देने में राम वन यात्रा का प्रयोजन है। शबरी भीलकन्या है, स्वयं को जड़मति, अधम जाति बताती है तो राम कहते हैं, मेरा तो केवल भक्ति से ही नाता है। जिनमें भक्ति दृढ़ है, वो मुझे अत्यन्त प्रिय है। इसलिए मैं तुम्हें योगियों को भी दुर्लभ गति प्रदान करता हूँ। यथा द्रष्टव्य–

अधम ते अधम अति नारी। तिन्हँ महँ मैं मतिमंद अघारी।
कह रघुपति सुनुभामिनी बाता। मानउँ एक भगति कर नाता।।[4]

---

[1] निसिचर हीन करऊँ महि भुज उठाई पन कीन्ह।
सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हि जाइ जाइ सुखदीन्ह।। मानस, अरण्यकाण्ड, दोहा 9
[2] रा.च.मा. अरण्यकाण्ड, पृ.सं. 620
[3] तनु तजि तात जाहु मम धामा। देउँ काह तुम्ह पूरनकामा।।
गीध देह तजि धरि हरि रूपा। भूषण बहु पटपीत अनूपा।। मानस, अरण्यकाण्ड, पृष्ठ संख्या 647
[4] मानस अरण्यकाण्ड, पृष्ठ संख्या 651

सोइ अतिसय प्रिय भामिनी मोरें। सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरें।
जोगि बृंद दुरलभ गति जोई। तो कहुँ आजु सुलभ भइ सोई।।[1]

ऋष्यमूक पर्वत पर हनुमान से मिले। हनुमान का अपने प्रभु राम से मिलन के सुख को तो महादेव भी नहीं बता सकते।[2]

राम वानरराज बालि से प्रताड़ित, निर्वासित सुग्रीव से मित्रता करते हैं और बालि को मारकर सुग्रीव को किष्किन्धा का राजा बना देते हैं। मित्र धर्म, सहयोग करने का वचन भूल जाने पर भी सुग्रीव को क्षमा कर, उसे भरत के समान प्यारा भाई बताया। इसी प्रकार रावण द्वारा पद प्रहार कर, अपमानित, तिरस्कृत कर लंका से निकाले जाने पर रामजी के शरण में आने पर शरणागत लंकेश कहकर तत्क्षण तिलक कर दिया। यथा द्रष्टव्य –

अस कहि राम तिलक तेहि सारा। सुमन बृष्टि नभ भई अपारा।।[3]

राम की उदारता तो देखिए, जिस संपदा को पाने के लिए रावण ने दसों सिर होम कर दिये। वही राम ने सकुचाते विभीषण को दी है। यथा –

जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिएँ दस माथ।
सोइ संपदा विभीषनहि संकुचि दीन्हि रघुनाथ।।[4]

शरणागत समुद्र की प्रार्थना पर जलचर प्राणी, पादप, पर्यावरण के रक्षार्थ सेत्तुबंध किया। सेतुबंध पर राम के चढ़ने पर सभी जलचर, मगरमच्छ, घड़ियाल, मच्छ, सर्प, विशालकाय प्राणी[5] परस्पर वैर विरोध भूलकर, राम के दर्शन कर हर्षित, सुखी हो रहे हैं। वे सब राम का रूप देखकर आनन्द और प्रेम से मग्न हो गये। यथा –

प्रभुहि बिलोकहिं टरहिं न टारे। मन हरषित सब भए सुखारे।।
तिन्ह कीं ओट न देखिअ बारी। मगन भए हरि रूप निहारी।।[6]

---

[1] मानस, अरण्यकाण्ड, पृष्ठ 652
[2] सो सुख उमा जाइ नहिं बरना। पुलकित तन मुख आव न बचना। मानस किष्किन्धाकाण्ड, पृष्ठ 667
[3] मानस, सुन्दरकाण्ड, पृष्ठ 742, दोहा 48/4
[4] मानस, सुन्दरकाण्ड, पृष्ठ 743, दोहा 49 (ख)
[5] मकर नक्र नाना झष बयाला। सत जो जन तन परम बिसाला।। मानस, लंकाकाण्ड, पृष्ठ 751
[6] मानस, लंकाकाण्ड, पृष्ठ सं. 760

लंका पहुँचकर दम्भी, अहंकारी, भयंकर राक्षसों का संहार किया। इन्द्र को जीतने वाले मेघनाद, कुम्भकर्ण, रावण के बलशाली पुत्रों का वध ही नहीं किया उनका उद्धार किया। जिसने राम प्रिया का हरण किया, वियोग का दंश दिया। राम के पौरुष को चुनौती दी, उस राक्षसराज रावण का वध कर उसे तार दिया। उनकी कृपा सन्तों पर ही नहीं, दुष्टो पर भी बरसती है। रावण को मुनिकुमारों के शाप से मुक्त कर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को आनन्दित किया। यथा द्रष्टव्य –

तासु तेज समान प्रभु आनन। हरषे देखि संभु चतुरानन।।
जय जय धुनि पूरी ब्रह्माण्डा। जय रघुबीर प्रबल भुजदण्डा।।[1]
कृपादृष्टि करि बृष्टि प्रभु अभय किए सुरबृंद।
भालु कीस सब हरषे जय सुख धाम मुकुंद।।[2]

निष्कर्ष –

रामजी का सम्पूर्ण जीवन, आचरण, कर्म जन–मन पीड़ा हरने के लिए और आनन्द प्रदान करने के लिए ही है। यथा –

'करत चरित सुर मुनि सुखदायक।' राम की कृपामयी दृष्टि सब पर है। पशु, पक्षी, बाल, वृद्ध नारी, राक्षस, दुष्ट, पतित, निर्वासित उनसे मिलकर सुखी हो जाते हैं। राम की यह पदयात्रा जन–जन तक पहुँचने की यात्रा है। जो योगी, सिद्ध, तपस्वी, सिद्ध महात्मा उन्हें पाने के लिए निरन्तर साधना कर रहे हैं, उन्हें साक्षात् दर्शन देकर परमसत्ता के सगुण स्वरूप का सरस, मधुर आस्वादन करवाना है।

मनुष्य जीवन को आदर्श रूप में जीने का ढंग समझाने के लिए यह यात्रा है। माता–पिता की आज्ञा सर्वोच्च है। रिश्तों की मर्यादा एवं गरिमा का मर्म अपने आचरण के द्वारा प्रमाणित करने की जन हृदय तक पहुँचने की यात्रा है।

धैर्य के सिन्धु राम, धर्म धुरीन राम, मर्यादा के चरमोत्कर्ष, ग्रामीणों, कोल, किरात, भीलों को गले लगाते हैं। जाति–पाँति की सभी सीमाओं को भुलाकर भक्ति को ही सर्वोच्च नाता बताकर शबरी से मिलते हैं। अहिल्या का उद्धार करते हैं। पतितों का उद्धार करने, निर्वासितों, वंचितों को अधिकार दिलवाने दुष्टों, पापियों को दण्ड देने, धर्म की शक्ति का जयघोष करने की यह पदयात्रा है। विशाल

[1] मानस, लंकाकाण्ड, पृष्ठ सं. 834
[2] मानस, लंकाकाण्ड, पृष्ठ सं. 865, दोहा 103

समुद्र पर सेतुबंध कर, आत्मबल को शस्त्र बना बन्दर, भालुओं, अप्रशिक्षित योद्धाओं, अल्प साधनों के द्वारा भयंकर, दुर्जय मायावी निसाचरों पर विजय पाने की पदयात्रा है। मनुष्य की अदम्य, जुझारू क्षमता दृढ़ संकल्प शक्ति की पदयात्रा है। राम की यह पदयात्रा जन–जन के हृदय को आनन्द से आप्लावित कर देने की यात्रा है, जिसमें मनुष्य, पशु, पक्षी, राक्षस, सृष्टि के सभी प्राणी आनन्दित होते हैं।